हिन्दी साहित्य में विकलांग विमर्श की संवेदनाएँ

अनुसंधान कर्ता
मोहनलाल दासुभाई वसावा
(पीएच.डी शोधछात्र)
सरदार पटेल युनिवर्सिटी,
वल्लभ विद्यानगर,
आणंद -गुजरात

प्रस्तावना -:

साहित्य समाज का अन्योन्याश्रित अंग है । समाज साहित्य से जूडकर एक आधारभूत सेतु बन मानव जाति को उसमें समाहित तथ्यों को साहित्य में उभारता है, और वही साहित्य जो समाज में स्थापित समस्याएँ, गतिविधियाँ, परिस्थितियाँ, घटनाएँ, प्रवृतियाँ एवम् परिवेश तथा मानवीय संवेदनाएँ जो संवेदनात्मक दृष्टिकोण से साहित्य में निहित होती है । मानव मूल्यों का निदर्शन और उसकी संवेदनाओं का विवरण साहित्य में अमूल्य स्थान प्राप्त करता है । हिंदी साहित्य में समस्यामूलकता को लेकर ज्यादातर ध्यान केंद्रीत किया गया है । उसमें विकलांग की संवेदनाशीलता की बातें भी उभारी गई है । हिंदी साहित्य में विकलांगता की परिभाषा में छिपी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, मानसिक एवम् आंगिक विकलांगता का विश्लेषण अधिकतम हुआ है । विकलांगता जन्मजात वरन दुर्घटनाप्रद होती है, जो मानव शरीर से या उसके मानसिकता पर आधारित होती है । हिंदी साहित्य के महाकवि सूरदास का उदाहरण दृष्टिगत होता है, जो जन्मजात नेत्रहीन थे । वे श्रीकृष्ण की बाललीलाओं का हूबहू जो आँखोदेखा विषयवस्तु हो वैसा हि हमारे सामने उनका चित्रण करते है । सूरदास के सामने भगवान भी विवश होकर उनको अपने परम ब्रह्म की शकितयाँ प्रदान कर देते है । भगवान कृष्ण भी सूरदास के प्रति सहानुभूति एवम् संवेदनशील हो जाते है, उसका उदाहरण देखे तो **" जब ब्रह्म परमात्मा सूरदास जैसे विकलांग से सहानुभूति और प्रेम करते थे । अत :चक्षु प्रदान किये थे । उनकी लाठी लेकर आगे चलते थे । उनके किर्तन और भजन को प्रेम से सुनते थे । तो हम विकलांगों से क्या धृणा । हमें भी उनसे प्रेम करना चाहिए । सहानुभूति रखनी चाहिए।"१**

विकलांग 'शब्द' की शब्दगत अर्थ की बात करे तो उसे अपाहिज, पंगु, अपंग, निशक्त, अंग बाधित या **Crippled, Handicapped** और आज सरकारी शब्द **Disabled** भाषाविद् करते है, सामान्य जन-समुदाय अलग-अलग परिवेश में अपने मानसिक भावों और परिस्थितिजन्यता से उनका अर्थ निकालते है । चिकित्सा विज्ञान तथा कानुन शास्त्र उससे बाध्य नहीं है । जो व्यकित दृष्टिहीन है, वो व्यक्ति दृष्टि से शक्तिवान है । चिकित्सकों के अनुरूप वह दृष्टिहीन है, या विकलांग है । इसीलिए उनको रेलगाडी या बसों में विकलांग बोगी या सीट मूआयना करवाते है । कानून द्वारा उनको निशक्त परंतु भाषाविज्ञानीयों के अनुसार वो पंगु नहीं है । मगर कठोरतम शब्द में कहाँ जाये तो वो अंधा है । आध्यात्मिक एवम् भावात्मक दृष्टिकोण से देखे तो उनको सूरदास की कोटी में रखा जाता है । जहाँ हाथ और पैर नहीं होते उनको अपंग व्यकित जिसे हम लूला या लंगडा शब्द से बाधित करते है । परंतु वह अंगबाधित अवश्य है लेकिन निशक्त नहीं है । लाचार नहीं एवम् पंगु भी नहीं है । इसीलिए कहा जाये तो मानसिक वरन् शारीरिक विकलांगता को हि आज 'विकलांग' शब्द से जोड दिया गया है । जो मानसिकता से पंगु है वही इस शब्द का प्रयोग कर ग्लानि अनुभव करते है । वे लोग कहते है कि अंधे को अंधा नही कहा जाये तो क्या कहना चाहिए । यही उनकी पंगु मानसिकता का उदाहरण है । जो अपनी निम्नवत सोच के कारण मानसिक पंगुता के शिकार होते है । मानसिक विकलांगता के प्रति व्यक्ति विशेषकर अपना अलग-अलग नजरियाँ रखता है । जब कोई पढा-लिखा विद्दवज मनोविशेषज्ञ यह कह दे की विकलांगों को खिलवाने से क्या फायदा? तो यह विचार या सोच किस मानसिकता की घोतक है । इसीलिए तो कहाँ जाता है, कि जिस व्यकितविशेष का एक अंग-उपांग नहीं होता है,

जिसे हम पंगु या विकलांग कहते है वो व्यकित हमेशा एक नयी छाप छोड जाता है । और साहित्य विधा हो या अन्य कोई क्षेत्र वे अपना व्यक्तित्व का प्रतिबिंब प्रस्थापित करते जाते है । **" बिमारी और विकलांगता पर किसी का वश नहीं है । जिन्दगी पर तो है...जिन्दगी सतरंगे सपनों की ही हसीन मंजील...इसे पाना थोडा मुश्किल है, पर असंभव नहीं, बस चाहिए विस्तार पाने की एक छोटी सी इच्छा, एक छोटी सी आशा ।"२** दिमाग से विचलित व्यकित को हम कभी समझना या सराह ना नहीं चाहते । शारीरिक या आंगिक क्लिष्ट्ता के कारण हम उससे दूर, धृणा का भाव रखते है । तथा अकार्यक्षमता वाले व्यक्ति को हम पास भी नहीं बुलाते उनको हम न संवेदना की दृष्टि से देखते है, ना हि सहानुभूति सिर्फ उनको अनदेखा और बूरी नजर से देखते हुए धृणित होते है । यह विकलांगों की उपेक्षा हम घर के दायरे में शिमट कर नहीं रख शकते वो समाज के नजरियें में भी धृणाशील बनता जाता है । आलोकनाथ यादव जी का एक कथन द्रष्ट्व्य है -**"विकलांग बंधु समाज हेतु बोझ नहीं है । वे भी स्वावलम्बी होकर समाज के विकास में योगदान दे सकते है । उनकी प्रतिभा और योग्यता को उभारने हेतु अवसर जरूरी है ।"३**

विकलांग व्यकित को देख हम अपना भावात्मक, स्नेहील, प्रेमिल, संवेदनशील, सहानुभूतिशील तथा मैत्रीभाव हमारे मन में उपस्थित करते हुए, उनके प्रति संवेदनात्मक दृष्टि रखते है । ज्यादातर संवेदना का भाव आते ही वो विकलांग पात्र दयाभाव का प्रमाण बन जाता है । संवेदना मानव मन के मूल्यों का विशेषकर भावात्मकता है, जो किसी भी व्यक्तिविशेष या प्राणी विशेषकर सृष्टि के जीवित जीवजंतु के प्रति उतना ही संवेदनात्मक भाव रखता है । मानव-मानव के प्रति वो भाव कही लूप्त हो जाता दिखाई देता है । हम संवेदनशील तब होते है, जब किसी को वेदना या दु:खों का पहाड टूट पडे । और उसी दु:ख-वेद्ना को देखकर हम आहत, निराश और हताश हो जाते है अन्यथा उसी कारणवश हम अरेरे, आह, ऊफ, हे भगवान, हाय आदि दयनीयताप्रद शब्दों का प्रयोजन करते है । संवेदनशीलता के भावों को आँखों में निहित प्रवाह जो आँसु के समान बन प्रवाहित होते है, तो ह्रदयग्राह्यता से उसे दु:खी होता देख वेदनानुभूति प्राप्त करते है । जहाँ किसी भी विकलांग व्यकित को देख ईश्वर की प्रति छबी दिखायी देती है । वो ईश्वरीय शकितयों का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है । संवेदनात्मकता उभर कर ह्रदयग्राह्यता प्राप्त करती है । इसीलिए स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के अनुसार **"जीव ही शिव है अत :उसकी सेवा प्रत्यक्ष परमेश्वर की पूजा है । जीव की सेवा किसी भी चेतना में अहंकार उत्पन्न कर देती है । परंतु जीवन को शिव मानकर की गई सेवा मन को आनन्दित करती है।"४**

हिंदी साहित्य में विकलांगों के प्रति संवेदनशीलता बहुत मात्रा में दिखाई गई है । वहाँ मानवमात्र नही पशु-पक्षीयों का वर्णन भी मिलता है । आचार्य हजारी प्रसाद द्रिवेदी जी का संस्मरण 'एक कुत्ता और मैना' में मैना अपाहिज दिखाई गई है । मगर उसके प्रति लेखक के भाव संवेदनापूर्ण है । हिंदी साहित्य में विकलांग चरित्र या पात्रों का उल्लेखन बहुत ही ज्यादा स्तर पर किया गया है । हिंदी साहित्यकारों ने अपने साहित्यिक रचनाओं में भरपूर मात्राओं में जिस विकलांग पात्रों का आंकलन किया, उनके प्रति उनकी सहानुभूति, संवेदनशीलता, भावात्मकता, सह्रदयता, प्रेमिलता, करूणात्मकता एवम् मैत्रिकता का जो भाव है वो ह्रदयग्राह्य था । और जो पात्र या चरित्र उन्हों ने चुना, उसे विशेष से विशेषकर यानी की सर्वोत्तम तथा सर्वोत्कृष्ट चरित्र के रूप में स्थापित किया । जैसे कि-

“चरण कमल बंदौ हरि राई,

जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै, अंधे को सब कुछ दरसाई ।

बहिरो सुनै मूक पुनि बोलैं, रंग चलै सिर छत्र घराई ।

‘सूरदास’ स्वामी करूणामय, बार-बार बंदौ तेहि पाई ।”५

हिन्दी साहित्य के प्रेरणास्रोत एवम् विकलांगो के प्रेरक वरन् वात्सल्य रस के सूत्रधार संत सूरदास जी ने भी इन्हीं पदों के द्वारा निहित कर दिया है कि, विकलांगों के लिए कोई भी वस्तु या कार्य असंभव नही है । वे असाधारण व्यक्तित्व के धनी है क्योंकि उनकी विकलांगता ही उनका सर्वोत्कृष्ट मनोबल बन सभी क्षेत्रों में आगे बढने की प्रेरणा देती है। साहित्य, संगीत, चित्रकला, नृत्यकला, फिल्मनिर्माण, खेलकुद, प्यार-मोहब्बत, शादी, पत्रकारिता, समाजसेवा, वकालत, शिक्षा, व्यापार, प्रशासन, विज्ञान, संशोधन, वीरता-संग्राम कुशलता, संघर्ष, राजनीति, पर्वातारोहण आदि क्षेत्रों में उनका व्यकितत्व उभर कर हमारे सामने सम्मानीय प्रतिभा एक अलग छाप छोड जाती है । इसीलिए कहा गया है मल्लिक महमद जायसी के बारे में कि -**“जायसी विकलांग होकर भी भारतीय संस्कृति के संवाहक है, उनकी विकलांगता उन्हें प्रेरणा देती है, कि विकलांग व्यकित अपने समान अपने देश के लिए भी क्या नहीं कर सकता।”६**

विकलांग व्यक्ति या पात्र शारीरिक या मानसिक कमजोरी की वजह से कभी भी अपना चरित्र अधुरा अथवा विकलांग नहीं बनने देता । गरीबी, अपमान, भूखमरी एवम् बेबसी में विकलांग व्यकित कभी हारते नहीं । इसीलिए डॉ.स्नेह आनंदजी कहते है कि - **“ कोई शारीरिक दोष अथवा विकृति से ग्रसित होता है तो कोई मानसिक अथवा बौधिक मंद्ता से बाधित होता है, कोई इन्द्रियजनित विकलांगता तो कोई संवेगात्मक रूप से अस्थिर चित्त होता है, कोई असंतुलित व्यकितत्व का और कोई प्रतिभा सम्पन्न शारीरिक सौष्ठव युक्त होता है ।“७** विकलांगता मानसिक या शारीरिक दृष्टि से मानकर जीवन के सुनहरे पलों को खोना नहीं चाहिए । साहित्य में देखे तो ज्यादातर पात्र अपनी विकलांगता की संवेदनात्मक भाव को उजागर करते है । सिम्मी हर्षिता द्वारा लिखित कहानी ‘अनिमंत्रित’ में मानसिक एवम् शारीरिक दोनों पक्षों से कमजोर तथा अक्षम बालक की बात का निदर्शन किया गया है, जो जन्मजात एक चिडिया के बच्चे के जैसा निर्दिष्ट किया गया है । लेखिका उस पात्र के प्रति अपनी संवेदनशीलता प्रस्तुत करते हुए कहती है कि -**“ एक अनजान और निर्वैर नन्हा, पक्षी जो अण्डे की दिवार से बाहर निकलते ही भूल से अपने धोंसले से निकलकर जमीन पर आ गिरा हो और आँखें मुँदें फर्श पर घायल पडा हो सब कुछ गुलाबी-गुलाबी बन्द पखंडी सा और ताँतिया गर्दन पर हुलहुल करता गिरा।”८** विकलांगता न जीवन की कमजोरी होती है, ना मन की दुविधा जो अपने व्यक्तित्व में मनोबल से कार्यक्षम हो वही आगे बढ शकता है । विकलांगता को छोड बहुत आगे अपना विशेष परिचय देता है । वैसा पात्र हमें ‘राजू’ नामक कहानी में मिल जाता है जिसकी लेखिका ममता कालिया है । वह पात्र बहुत समस्याओं से लड कर एक विशेष सफलता को पाता है । और जीवन के नये रास्तों को प्राप्त करता है । इस कहानी में विकलांगों की विभिन्न संवेदनाओं का निदर्शन किया गया है । डॉ.सानप श्याम ने कहा है **–“ राजू नामक बालविज्ञान को प्रस्तुत करनेवाली इस कहानी में अंधश्रधा और अर्थाभाव के कारण बीमार राजू के प्रति**

माता की भाव विप्लव दशा को व्यक्त किया है ।"९ विकलांग राजू कहानी में 'अपशकुनिया' माना गया है । जहाँ विवाह के घर में राजू को कोठरी में बंध कर दिया जाता है । इससे ज्यादा विकलांगता क्या होगी जो मानसिक विकलांगता उदाहरण समाज और परिवार के सभ्यों द्वारा दिया जाता है । उनकी अंधश्रधा हि सबसे बडी विकलांगता है । राजू के प्रति संवेदनात्मकता न होते हुए उसे कोठरी में बंध कर ऐसा दुर्व्यवहार होता है । इसीलिए डॉ.जितेंद्र कुमार सिंहजी ने कहा है -**" विकलांगता के संदर्भ में कुछ लोगों की धारणा बहुत गलत और अंधविश्वासपूर्ण है ।"१०**

हिंदी साहित्य में कहानी के साथ-साथ उपन्यासों में भी विकलांगता की विषयसूचीता का निदर्शन करते हुए, उसमें समाहित आंतरिक भावों का ह्रदयग्राह्य चित्रण किया गया है । जो कि संवेदना की एक परिपाटी पर खरा उत्तरना चाहता है । जो पात्र उपन्यास में लिए गये है वो सभी अपनी विकलांगता को अपनी शकित बनाते है । 'खंजन नयन' का सूरदास में सूरदास नाम का पात्र जो नेत्रहीन होते हुए, अपनी भकित भाव से संघर्षमय जीवन में जीत प्राप्त करता है । संपूर्ण जीवन के दु:खों से ओत-प्रोत होते हुए वो अपने शब्दों में व्यथा व्यक्त करता है । **" इन विक्षिप्त जनों में ही अपने परम सौंदर्य चंद्र श्याम सखा को देखुँगा और कुछ नहीं तो संगीत से उनकी सेवा कर सकता हूँ ।"११** सूरदास की विकलांगता उसकी कमजोरी नहीं है, इसलिए उसमें बहुत से गुणों का पादूर्भाव होता है । जैसे कि विनयशील, लोकोपकारी, ज्योतिष का ज्ञानी, काव्य प्रतिभा का धनी आदि । इसी आधार को लेकर डॉ.पुष्पा बंसल जी ने कहा है -**" सूरदास का चरित्र मानवीय कम एवम् अतिमानवीय अधिक है । १६-१८ के नवयुवक में जगत, नारी, प्रेम आदि विषयों के संबंध में भौग्य आकर्षण के स्थान पर जो साधनाजनित निषेध भाव है वह मनोविज्ञान को स्वीकार्य नहीं हो सकता । 'खंजन नयन' का सूरदास एक कमजोर पात्र है ।"१२**

विकलांगता का धनीभूत पात्र संजीवनी की माँ जो 'बेघर' उपन्यास का चरित्र है । वह शारीरिक विकलांग स्त्री है । गूंगी और बहरी भी है । संजीवनी नोकरी करते हुए, उसके प्रति संवेदनशील है । मगर उनके घर का अन्य सदस्य भाभी वो उनके प्रति धृणाशील है । इसी कारणवश संजीवनी अत्यंत त्रस्त और कुठित दिखाई देती है । मानसिक तनाव और भावनाओं के कारण उन्हें कभी कभार दौरे भी पडते है । और खाने-पीने की सुध भी नहीं रहती **–"माँ को लेकर संजीवनी बहुत टची थी और उसकी वजह से दिन में एक से ज्यादा बार भाभी से उसकी झडप हो जाती ।"१३** 'बेघर' उपन्यास में संजीवनी अपने माँ के प्रति संवेदनशीलता का निदर्शन करती है, मगर उसके सामने दुसरा पात्र भाभी जो नारी चरित्र है वो कठोर और धृणा से ग्रस्त है । उसी वजह से संजीवनी अपनी भाभी के बीच झडप होती रहती है ।

हिंदी साहित्य के सर्वोत्कृष्ट प्रतिभा संपन्न साहित्यकार रामदरश मिश्राजी के द्वारा रचित 'बिना दरवाजे का मकान' उपन्यास में विकलांग पात्र 'बहादूर' का चित्रण मिलता है । जो अपने अपाहिजपन में बहुत दु:खी होता है । उसकी विकलांगता एक दुर्घटनाग्रस्त है । उसका एक पैर बेकार है और कमर में भी दर्दनाक घाँव है जिससे उसे उठ्ने बैठ्ने में बहुत तकलीफ होती है । उसकी पत्नि उसे संभालती है । उसके आस-पास के परिवेश के कारण स्वभाव गुस्सेल हो जाता है । उसी वजह से एक स्त्री को गुस्से में बोलता है तो वह औरत खरीखोटी सुनाते हुए कहती है – **"अरे अपाहिज, चुप करके बैठ, तेरे बाप की जमीन में नहीं फेंक**

रही हूँ।"१४ विकलांगता का जो मझाक उडा या गया है । वहाँ मानवीय मूल्यों को तार-तार कर दिया गया है । 'अपाहिज' को अपाहिज कह कर अपना अस्तित्व खतम कर रहे है । विकलांगता की प्रतिरूपता में हम जो विकलांग है उनके प्रति संवेदनशील न होकर उनके प्रति धृणाशीलता दर्शाते है । इसी उपन्यास में जो समझदार समाज का सचेत व्यक्तित्व जो समझते हुए भी नासमझ होता दिखता है । जो विकलांगता का एक नया पक्ष दिखाता है । संवेदना तो नहीं मगर कुण्ठा निर्दिष्ट करता है ।

निष्कर्ष-:

हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में कहीं न कहीं विकलांगता का निदर्शन किया गया है । विकलांगता साहित्य की देन नहीं अपितु समाज के दायरे की देन है जो मानसिक एवम् शारीरिक दृष्टि से हमें विकलांग बनाते है । समाज में प्रस्थापित विद्वजगण जो कार्यक्षम एवम कर्मनिष्ठ होते हुए भी जो विकलांग व्यकित या पात्रों के बारे में ग्लानि और कुण्ठा का भाव रखते है, वो सर्वोनुमते विकलांग है । निर्दिष्ट कहानियों में और उपन्यासों में विकलांग पात्रों के द्वारा समाज में जो 'विकलांगता' छिपी है, उसका प्रतिबिंब स्पष्ट करना चाहा है । 'सूरदास' जो आँखों से अंध होते हुए, सभी विधाओं का ज्ञानी है -तेजस्वी, प्रतापी, ज्ञानी एवम तत्वचिंतक बनता है । संगीतमयता से वो भकितमता का सर्वोत्कृष्ट भाव अपने भगवान कृष्ण के प्रति रखता है । विकलांगता जन्मदत या दुर्घटनाग्रस्त हो सकती है । 'अनिमंत्रित' कहानी में एक जन्मजात बालक का हृदय द्रवित वर्णन मिलता है । जो अपनी विकलांगता को मानसिक एवम शारीरिक तथ्यों पर छोड देता है । राजू नामक पात्र जो अपनी कमजोरी विकलांगता को अपनी शकित बनाता है । और समाज के सामने जो विकलांग चरित्र प्राप्त होते है उनका मनोबल बढाता है । आज का समाज 'अंधविश्वास' की आड में विकलांग बनते जाते है । और मानसिकता नष्ट होती दिखाई देती है । संवेदनशीलता लूप्त हो जाती है । 'खंजन नयन' का सूरदास जन्मद्त नेत्रहीन पात्र है, मगर उसमें भी प्रतिभा का प्रादुर्भाव कुट-कुट कर भरा पडा है । 'बेघर' उपन्यास का पात्र संजीवनी की माँ भी पारिवारीक कुण्ठा से ग्रस्त होती है । संजीवनी भी अपनी माता के प्रति बहुत संवेदनशील नारी पात्र है । उसीका विरोधापात्र चरित्र भाभी माँ के प्रति ग्लानि रखती है । यही समाज की वास्तविकता है । जो मानवमूल्यों को शर्मसार करता है । 'बहादूर' नाम का पात्र भी समाज कटु शब्दों से परेशान और दु:खी है । जहाँ अन्य नारी पात्रों दवारा 'अपाहिज' की उपमा प्राप्त कर बहुत विह्वलता की अनुभूति करता है । जो अशक्तता किसी भी व्यकित विशेष की ताकात या शकित होती है । समाज दवारा हमेशा उनको अनदेखा किया या खराब शब्दों से पुकार कर खरीखोटी सुनाया करते है । 'विकलांगता' जो मानसिक और शारीरिक न होकर सामाजिक मानवीय मूल्यों की भावोंत्मात्मक ग्लानि रूप है । समाज की वैचारिकता मनों में विकलांगता प्राप्त करवाती है । संवेदना तो एक एहसास मात्र बनता जाता है ।

" मैं विकलांग न शरीर से, न मन से
जो देख मुझे रखता 'संवेदना' हृदय में
आज समाज की दृष्टि छिन्न हो गई
ऐ देख मुझे 'में विकलांग' नहीं बना

अब लाचार, दयालु एवम मार्मिक
पंगु, नेत्रहीन, अपाहिज न कर्म बना
मन का मनोबल द्रठता से प्रतिभा संपन्न
उन उच्चाईयों को प्राप्त करता चला में
'सूरदास' बन अंध की उपमा प्राप्त की
जीवन की श्रेष्ठ्ता 'सूरदास' में समाविष्ट
आज समाज से गुजारिश है -'विकलांग'
हमें मत बनाओं अपने मन की विकलांगता
बहुत दूर तक नरक में समाविष्ट कर दो
विकलांगता समाप्त करों मन की शुद्धता से
तब संवेदनशीलता बनेगी 'मानव'
चरित्र में विकलांगता की ।"

(मेरे शब्दों में विकलांगता(

संदर्भ सूचि -:

१. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श -सं.डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.३४
२. विकलांग विमर्श -सं.डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.६०
३. विकलांग विमर्श -सं.डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.१६९
४. विकलांग विमर्श -सं.डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.१२८
५. हिंदी काव्यधारा सं.दूधनाथ सिंह, पृ.३६
६. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श -सं.डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.३५
७. विकलांग बालक :एक अध्ययन -डॉ.स्नेह आनंद, दो शब्द से
८. विकलांग जीवन की कहानियाँ -सं.गिरिराज शरण, पृ.१४६
९. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, डॉ.सानप श्याम पृ.१२१
१०. कथा साहित्य में विकलांग विमर्श -सं. डॉ.विनय कुमार पाठक, पृ.१०१
११. 'खंजन नयन' -अमृतलाल नागर, पृ.१०६

१२. अमृतलाल नागर भारतीय उपन्यासकार -डॉ.पुष्पा बंसल पृ.६०

१३. 'बेघर' ममता कालिया, पृ.६०

१४. बिना दरवाजे का मकान, रामदरश मिश्र, पृ.५१